# पाठ 12: भदंत आनंद कौसल्यायन (संस्कृति)

## 1. लेखक परिचय (Author Introduction)

- **लेखक का नाम:** भदंत आनंद कौसल्यायन (बौद्ध भिक्षु और प्रख्यात साहित्यकार)।
- **प्रमुख रचनाएँ:** भिक्षु के पत्र, जो भूल न सका, रेल का टिकट।
- **विशेषता:** इन्होंने अपने जीवन का बड़ा हिस्सा बौद्ध धर्म के प्रचार और समाज सेवा में बिताया।

## 2. पाठ का प्रसंग (Context of the Chapter)

इस निबंध में लेखक ने **'सभ्यता' (Civilization)** और **'संस्कृति' (Culture)** के बीच के बारीक अंतर को स्पष्ट किया है, जिन्हें आम तौर पर लोग एक ही मान लेते हैं। लेखक ने स्पष्ट किया है कि संस्कृति क्या है और असंस्कृति क्या है।

Scholarbit

## 3. विस्तृत सारांश (Detailed Summary)

**संस्कृति बनाम सभ्यता:** लेखक के अनुसार, मनुष्य की वह बुद्धि या योग्यता जिसके बल पर वह किसी 'नई चीज़' का आविष्कार करता है, वह **'संस्कृति'** है। और जब वह आविष्कार (या उसका फल) आगे आने वाली पीढ़ियों को बिना मेहनत के मिल जाता है, तो वह **'सभ्यता'** कहलाती है। यानी संस्कृति 'कारण' है और सभ्यता 'परिणाम' है।

**न्यूटन का उदाहरण:** न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण (Gravity) का आविष्कार किया, इसलिए वह **'संस्कृत मानव'** था। आज के विज्ञान के छात्र न्यूटन के सिद्धांत के साथ और भी बहुत कुछ जानते हैं, लेकिन उन्होंने इसका आविष्कार नहीं किया। इसलिए आज के छात्र **'सभ्य'** तो हैं, परन्तु 'संस्कृत' नहीं।

**संस्कृति का स्वरूप:** आग का आविष्कार पेट की आग बुझाने के लिए हुआ और सूई-धागे का आविष्कार ठंड से बचने के लिए हुआ। मनुष्य की यह योग्यता ही संस्कृति है।

**संस्कृति और असंस्कृति:** लेखक का मानना है कि सच्ची संस्कृति वह है जो मनुष्य का **'कल्याण' (भलाई)** करे। मनुष्य की जो योग्यता विनाशकारी हथियार (जैसे परमाणु बम) बनाती है, उसे 'संस्कृति' नहीं बल्कि **'असंस्कृति'** कहा जाना चाहिए। मानव संस्कृति एक ऐसी वस्तु है जिसे बाँटा नहीं जा सकता (अविभाज्य है)।

## 4. पाठ का मूल भाव / संदेश (Central Theme)

सच्ची संस्कृति हमेशा कल्याणकारी (सबका भला करने वाली) होती है। दूसरों के भले के लिए किया गया त्याग और नई खोज ही मनुष्य को 'संस्कृत' बनाती है। हमें विनाशकारी प्रवृत्तियों (असंस्कृति) से बचना चाहिए और मानव संस्कृति को एक (अविभाज्य) मानना चाहिए।

Schorbit

## 5. महत्त्वपूर्ण बिंदु (Key Points for Exam)

- **संस्कृत व्यक्ति:** वह जो कुछ 'नया' खोजता है।
- **सभ्य व्यक्ति:** वह जो पूर्वजों की खोजी हुई चीज़ों का इस्तेमाल करता है।
- **संस्कृति का लक्ष्य:** केवल मानव कल्याण।
- **आत्म-विनाश के साधन:** (विनाशकारी हथियार) इन्हें 'असंस्कृति' माना गया है।

© 2026 schorbit.com. All rights reserved.
*Prepared exclusively for Schorbit Students*